International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 32-37

सिंहली तथा हिंदी की क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से व्यतिरेकी विश्लेषण

संगीत रत्नायक

ज्येष्ठ व्याख्याता, भाषा अध्यनयन विभाग, सबरगमुव विश्वविद्यालय, बेलिहुलओय, श्री लंका।

प्रस्तावना

सिंहली भाषा भारतीय आर्य भाषा परिवार से संबंधित है, इसलिए हिदी भाषा के समान वाक्य संरचना– कर्ता, कर्म, क्रिया का प्रयुक्त होना, विशेषण का प्रयोग विशेष्य से पहले किया जाना, संस्कृत भाषा की वर्णमाला के समकक्ष उच्चारण, संस्कृत भाषा से संबंधित शब्दों का अधिक प्रयोग आदि इसकी विशेषता है। प्रस्तुत लेख में सिंहली और हिंदी की निम्नंलिखित बातों का विश्लेषण किया गया है।

1. सिंहली और हिंदी के उत्तम पुरुष की कुछ (भूतकालिक) क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण
2. सिंहली और हिंदी के मध्यम पुरुष की कुछ (भूतकालिक) क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण
3. सिंहली और हिंदी के अन्य पुरुष की कुछ (भूतकालिक) क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण
4. सिंहली और हिंदी के सकर्मक, सामान्य भूतकालिक वाक्यों का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण
5. सिंहली और हिंदी के अकर्मक, सामान्य भूतकालिक क्रिया का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण
6. सिंहली और हिंदी के उत्तम पुरुष (वर्तमानकाल) के वाक्यों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण
7. सिंहली और हिंदी के मध्यम पुरुष (वर्तमानकाल) के वाक्यों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण
8. सिंहली और हिंदी के अन्य पुरुष (वर्तमानकाल) के वाक्यों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण
9. सिंहली और हिंदी के उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष (भविष्यत् काल) के वाक्यों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण

1. सिंहली और हिंदी के उत्त्म पुरुष की कुछ (भूतकालिक) क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार है।

तालिक 1

<table>
<tr><th rowspan="2">मूल क्रिया</th><th rowspan="2">परिवर्तित रूप</th><th colspan="4">प्रत्यय</th><th colspan="4">भूतकालिक क्रिया</th></tr>
<tr><th>पु. एक.</th><th>स्त्री. एक.</th><th colspan="2">बहुवचन</th><th>पुरुषवाची एकवचन</th><th>स्त्रीवाची एकवचन</th><th>पुरुषवाची बहुवचन</th><th>स्त्रीवाची बहुवचन</th></tr>
<tr><td>naṭə</td><td>छ्रट्न</td><td colspan="2">emi</td><td colspan="2">emu</td><td colspan="2">næṭuvemi</td><td colspan="2">næṭuvemu</td></tr>
<tr><td rowspan="2">नाच</td><td rowspan="2">–</td><td>आ</td><td>ई</td><td>पु.</td><td>स्त्री</td><td rowspan="2">नाचा</td><td rowspan="2">नाची</td><td rowspan="2">नाचे</td><td rowspan="2">नाचीं</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>ए</td><td>ईं</td></tr>
<tr><td>væṭe</td><td>टद्रट्न</td><td colspan="2">emi</td><td colspan="2">emu</td><td colspan="2">væṭunemi</td><td colspan="2">væṭunemu</td></tr>
<tr><td rowspan="2">गिर</td><td rowspan="2">–</td><td>आ</td><td>ई</td><td>पु.</td><td>स्त्री</td><td rowspan="2">गिरा</td><td rowspan="2">गिरी</td><td rowspan="2">गिरे</td><td rowspan="2">गिरीं</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>ए</td><td>ईं</td></tr>
<tr><td>nægiṭi</td><td>nægiṭ</td><td colspan="2">emi</td><td colspan="2">emu</td><td colspan="2">nægiṭṭemi</td><td colspan="2">nægiṭṭemu</td></tr>
<tr><td rowspan="2">उठ</td><td rowspan="2">–</td><td>आ</td><td>ई</td><td>पु.</td><td>स्त्री</td><td rowspan="2">उठा</td><td rowspan="2">उठी</td><td rowspan="2">उठे</td><td rowspan="2">उठीं</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>ए</td><td>ईं</td></tr>
<tr><td>va:ḍi ve</td><td>va:ḍi vu</td><td colspan="2">emi</td><td colspan="2">emu</td><td colspan="2">va:ḍi vunemi</td><td colspan="2">va:ḍi vunemu</td></tr>
<tr><td rowspan="2">बैठ</td><td rowspan="2">–</td><td>आ</td><td>ई</td><td>पु.</td><td>स्त्री</td><td rowspan="2">बैठा</td><td rowspan="2">बैठी</td><td rowspan="2">बैठे</td><td rowspan="2">बैठीं</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>ए</td><td>ईं</td></tr>
</table>

इस रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्ननलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

1.1. सिंहली में उत्तम पुरुष के साथ अन्य पुरुष से भिन्न – उत्तम पुरुष एकवचन (मैं) में – emi बहुवचन (हम) में – emu लगते हैं। हिंदी में ऐसा परिवर्तन नहीं होता।

1.2. सिंहली की क्रियाएँ उत्तम पुरुष में लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग में अपरिवर्तित रहती हैं। हिंदी की क्रियाएँ लिंग के अनुसार बदलती हैं।

1.3. लिंग–वचन के प्रत्यय लगने से पूर्व सिंहली की मूल क्रियाओं में परिवर्तन होता है। हिंदी की मूल क्रियाएँ अपरिवर्तित रहती हैं।

2. सिंहली और हिंदी के मध्यम पुरुष की कुछ (भूतकालिक) क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार है।

तलिका 2

मूल क्रिया	परिवर्तित रूप	प्रत्यय				भूतकालिक क्रिया			
		पु. एक.	स्त्री. एक.	बहुवचन		पु. एकवचन	स्त्री. एकवचन	बहुवचन	
naṭə	næṭu	i:hi		i:hu		næṭuvi:hi		næṭuvi:hu	
नाच	–	ए	ई	पु.	स्त्री	नाचे	नाचीं	पु.	स्त्री
				ए	ईं			नाचे	नाचीं
væṭe	væṭu	i:hi		i:hu		væṭuni:hi		væṭuni:hu	
गिर	–	ए	ई	पु.	स्त्री	गिरे	गिरीं	गिरे	गिरीं
				ए	ईं				
nægiṭi	nægiṭ	i:hi		i:hu		nægiṭṭi:hi		nægiṭṭi:hu	
उठ	–	ए	ई	पु.	स्त्री	उठे	उठीं	उठे	उठीं
				ए	ईं				
va:ḍi ve	va:ḍi vu	i:hi		i:hu		va:ḍi vuni:hi		va:ḍi vuni:hu	
बैठ	–	ए	ई	पु.	स्त्री	बैठे	बैठीं	बैठे	बैठीं
				ए	ईं				
		ए	ई	पु.	स्त्री				

उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेरषण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

2.1. सिंहली मध्यम पुरुष के साथ अन्य पुरुष से भिन्न – मध्यम पुरुष – एकवचन (तुम) में – i:hi बहुवचन में – i:hu लगते हैं। हिंदी में ऐसा परिवर्तन नहीं होता, बल्कि 'तुम' सम्मानार्थक (बहुवचन) होने के कारण पुरुषवाची एकवचन कर्ता के होने पर भी बहुवचन प्रत्यय 'ए' प्रयुक्त होता है।

2.2. सिंहली की क्रियाएँ मध्यम पुरुष में भी लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग में अपरिवर्तित रहती हैं। हिंदी की क्रियाएँ लिंग के अनुसार बदलती हैं।

2.3. लिंग–वचन के प्रत्यय लगने से पूर्व सिंहली की मूल क्रियाओं में परिवर्तन होता है। हिंदी की मूल क्रियाएँ अपरिवर्तित रहती हैं।

3. सिंहली और हिंदी के अन्य पुरुष की कुछ (भूतकालिक) क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार है।

तालिका 3

मूल क्रिया	परिवर्तित रूप	प्रत्यय				भूतकालिक क्रिया			
		पु. एक.	स्त्री. एक.	पु.बहु	स्त्री.बहु.	पु. एकवचन	स्त्री. एकवचन	पु.बहुवचन	स्त्री. बहुवचन
saləkə	sæləku	e:yə	a:yə	o:yə	a:hə	sæləku ve:yə	sæləku va:yə	sæləku vo:yə/	sæləku va:hə
सत्कार कर / मान	–	आ	ई	ए	ईं	सत्कार किया / माना	मानी	माने	मानीं
poləb̃ə	peləb̃u	e:yə	a:yə	o:yə	a:hə	peləb̃uve:yə	peləb̃u va:yə	peləb̃u vo:yə	peləb̃u va:hə
प्रोत्साहित कर	–	आ	ई	ए	ईं	प्रोत्साहित किया	की	किये	कीं
navatvə	Nævætvu	e:yə	a:yə	o:yə	a:hə	Nævætvu ve:yə	nævætu va:yə	Nævætvuv o:yə	Nævæt vua:hə
रोक	–	आ	ई	ए	ईं	रोका	रोकी	रोके	रोकीं
valakvə	vælækvu	e:yə	a:yə	o:yə	a:hə	Vælækvu ve:yə	vælækvu va:yə	vælæk vuvo:yə	Vælæk vua:hə
रोक	–	=	=	=		=	=	=	
naṭə	næṭu	e:yə	a:yə	o:yə	a:hə	næṭu ve:yə	næṭu va:yə	næṭu vo:yə	næṭu:hə
नाच	–	आ	ई	ए	ईं	नाचा	नाची	नाचे	नाचीं
væṭe	væṭu	e:yə	a:yə	o:yə	a:hə	væṭu ne:yə	væṭu na:yə	væṭu no:yə	væṭu na:hə
गिर	–	आ	ई	ए	ईं	गिरा	गिरी	गिरे	गिरीं

उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

3.1. हिंदी के लिंग–वचन के आ, ई, ए तथा ईं प्रत्ययों के समकक्ष में सिहली में क्रमशः 'e:yə', 'a:yə' , 'o:yə' तथा 'a:hə' प्रयुक्त होते हैं।

3.2. सिंहली की क्रियाएँ उत्तम तथा मध्यम पुरुष में लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् स्त्री लिंग तथा पुल्लिंग में अपरिवर्तित रहती हैं। अन्य पुरुष में क्रियाएँ लिंग के अनुसार बदलती हैं।

3.3. लिंग–वचन के प्रत्यय लगने से पूर्व सिंहली की मूल क्रियाओं में परिवर्तन होता है। हिंदी की मूल क्रियाएँ अपरिवर्तित रहती हैं।

4. सिंहली और हिंदी के सकर्मक, सामान्य भूतकालिक वाक्यों का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार हैं।

तालिका 4:

पुरुष	भाषा	लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
उत्तम पुरुष	हिंदी	एकवचन	मैंने गीत गाए।	मैंने गीत गाए।
	सिंहली		mamə gi:tə gæyuvemi	
	हिंदी	बहुवचन	हमने गीत गाए।	हमने गीत गाए।
	सिंहली		api gi:tə gæyuvemu	
मध्यम पुरुष	हिंदी	एकवचन	तूने गीत गाए।	तूने गीत गाए।
	सिंहली		to: gi:tə gæyuvi:hi	
	हिंदी	बहुवचन	-	-
	सिंहली		topi gi:tə gæyuvi:hu	
	हिंदी	एकवचन	तुमने/ आपने गीत गाए।	तुमने/आपने गीत गाए।
	सिंहली		nuɓə/ oɓə gi:tə gæyuvi:hi	
	हिंदी	बहुवचन	तुम लोगों ने गीत गाए।	तुम लोगों ने गीत गाए।
	सिंहली		nuɓəla:/ oɓəla: gi:tə gæyuvi:hu	
अन्य पुरुष	हिंदी	एकवचन	सीता ने गीत गाए।	मनोज ने गीत गाए।
	सिंहली		si:ta: gi:tə gæyuva:yə	mano:j gi:tə gæyuve:yə
	हिंदी	बहुवचन	लड़कियों ने गीत गाए।	उन्होंने गीत गाए।
	सिंहली		gæhænu lamai gi:tə gæyuva:hə	ovuhu gi:tə gæyuvo:yə

सिंहली और हिंदी के सामान्य भूतकाल की सकर्मक क्रिया की उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्निलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

4.1. सामान्य भूतकाल की सकर्मक क्रियाओं में हिंदी में कर्ता के साथ 'ने' जुड़ता है, और कर्म के लिंग–वचन के अनुसार क्रिया बदलती है। इस प्रकार उपर्युक्त तालिका में कर्म 'गीत' पुरुषवाची बहुवचन होने के कारण क्रिया सर्वत्र पुरुषवाची बहुवचन में ही 'गाए' प्रयुक्त हुई है।

4.2. सामान्य भूतकालिक सकर्मक क्रियाओं में सिंहली में कर्ता के साथ 'ने' जैसा कोई नहीं जुड़ता है, और उत्तम तथा मध्यम पुरुष में कर्ता के वचन तथा पुरुष के अनुसार क्रिया बदलती है। केवल अन्य पुरुष में वचन तथा पुरुष के साथ लिंग के अनुसार भी क्रिया बदलती है।

5. सिंहली और हिंदी के अकर्मक, सामान्य भूतकालिक क्रिया का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार हैं।

तालिका 5

पुरुष	भाषा	लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
उत्तम पुरुष	हिंदी	एकवचन	मैं हँसी।	मैं हँसा।
	सिंहली		mamə sina:sunemi	
	हिंदी	बहुवचन	हम हँसीं।	हम हँसे।
	सिंहली		api sina:sunemu	
मध्यम पुरुष	हिंदी	एकवचन	तू हँसी।	तू हँसा।
	सिंहली		to: sina:si:hi	
	हिंदी	बहुवचन	–	–
	सिंहली		topi sina:si:hu	
	हिंदी	एकवचन	तुम हँसी।/ आप हँसीं।	तुम/आप हँसे।
	सिंहली		nuɓə/ oɓə sina:si:hi	
	हिंदी	बहुवचन	तुम लोग हँसीं।	तुम लोग/आप लोग हँसे।
	सिंहली		nuɓəla:/ oɓəla: sina:si:hu	
अन्य पुरुष	हिंदी	एकवचन	सीता हँसी।	मनोज हँसा।
	सिंहली		si:ta: sina:suna:yə	mano:j sina:sune:yə
	हिंदी	बहुवचन	लड़कियाँ हँसीं।	वे हँसे।
	सिंहली		gæhænu lamai sina:suna:hə	ovuhu sina:suno:yə

सामान्य भूतकालिक अकर्मक क्रिया की उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

5.1. उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष में हिंदी में (सम्मानबोधक सर्वनामों को छोड़कर) स्त्रीवाची एकवचन के लिए 'हँसी', पुरुषवाची एकवचन के लिए 'हँसा', स्त्री वाची बहुवचन के लिए 'हँसीं', तथा पुरुषवाची बहुवचन के लिए 'हँसे' प्रयुक्त हुए हैं। सिंहली के अन्य पुरुष में उसके समकक्ष में क्रमशः 'sina:suna:yə'; 'sina:sune:yə'; 'sina:suna:hə' तथा 'sina:suno:yə' प्रयुक्त हुए हैं, लेकिन उत्तम पुरुष एकवचन में '-emi'य बहुवचन में '-emu' तथा मध्यम पुरुष एकवचन में '-i:hi'; बहुवचन में '-i:hu' अलग–अलग प्रत्यय लगते हैं।

5.2. सिंहली के सामान्य भूतकाल की क्रियाएँ उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष में लिंग निरपेक्ष रहती हैं।

5.3. हिंदी के मध्यम पुरुष में 'तुम' तथा 'आप' के साथ पुरुषवाची एकवचन में सम्मानबोधक 'हँसे' प्रयुक्त होता है। 'आप' के साथ स्त्रीवाची एकवचन में सम्मानबोधक 'हँसीं' प्रयुक्त होता है।

6. सिंहली और हिंदी के उत्तम पुरुष (वर्तमानकाल) के वाक्यों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार हैं।

तालिका 6

स्त्रीवाची एकवचन	पुरुषवाची एकवचन	स्त्रीवाची बहुवचन	पुरुषवाची बहुवचन
mamə yami (ya+mi)		api yamu (ya+mu)	
मैं जाती हूँ।	मैं जाता हूँ।	हम जाती हैं।	हम जाते हैं।
mamə naṭəmi (naṭə+mi)		api naṭəmu (naṭə+mu)	
मैं नाचती हूँ।	मैं नाचता हूँ।	हम नाचती हैं।	हम नाचते हैं।

उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

6.1. वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष की क्रियाएँ लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् सिंहली में स्त्रीवाची कर्ता के प्रयुक्त होने पर भी क्रिया में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि हिंदी की क्रिया बदलती है।

6.2. सिंहली में वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष एकवचन के लिए क्रिया में 'mi' तथा बहुवचन के लिए 'mu' लगते हैं, जबकि हिंदी में स्त्रीवाची एकवचन स्त्री़वाची बहुवचन पुरुषवाची एकवचन तथा पुरुषवाची बहुवचन के लिए अलग–अलग प्रत्य – क्रमशः 'ती है', 'ती हैं', 'ता है' तथा 'ते हैं' लगते हैं।

7. सिंहली और हिंदी के मध्यम पुरुष (वर्तमानकाल) के वाक्यों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार हैं।

तालिका 7

कर्ता	क्रियामूल	स्त्रीवाची एकवचन	पुरुषवाची एकवचन	स्त्रीवाची बहुवचन	पुरुषवाची बहुवचन
to:	Ya	ya+hi = yahi		ya+hu = yahu	
तू	देख	देखती है।	देखता है।	–	–
nubə	natə	natə+hi = natəhi		natə+hu = natəhu	
तुम	नाच	नाचती हो।	नाचते हो।	नाचती हो।	नाचते हो।
obə	bo	bo+hi = bohi		bo+ hu = bohu	
आप	पी	पीती हैं।	पीते हैं।	पीती हैं।	पीते हैं।
to:	Rak	rak+i+hi = rakihi		rak+i+ hu = rakihu	

उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

7.1. वर्तमानकालिक मध्यम पुरुष की क्रियाएँ भी लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् सिंहली में स्त्रीवाची कर्ता के प्रयुक्त होने पर भी क्रिया में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि हिंदी की क्रिया बदलती है।

7.2. हिंदी में 'तू' का बहुवचन सूचक नहीं लगता, जबकि सिंहली में लगता है।

7.3. सिंहली में वर्तमानकालिक मध्यम पुरुष एकवचन के लिए क्रिया में 'hi' तथा बहुवचन के लिए 'hu' लगते हैं, जबकि हिंदी में 'तुम' के साथ स्त्रीवाची एकवचन स्त्रीवाची बहुवचन पुरुषवाची एकवचन तथा पुरुषवाची बहुवचन में क्रियामूल में जुड़नेवाले 'ती, ता, ते' के बाद 'हो' जुड़ा रहता है।

7.4. हिंदी में 'तुम' के साथ पुरुषवाची एकवचन में सम्मानार्थ को सूचित करने के लिए बहुवचन सूचक 'ते' प्रत्यय लगता है।

7.5. हिंदी में 'आप' के साथ स्त्रीवाची बहुवचन पुरुषवाची एकवचन तथा पुरुषवाची बहुवचन में सम्मानबोधक बहुवचन सूचक 'हैं' प्रत्यय लगता है।

8. सिंहली और हिंदी के अन्य पुरुष (वर्तमानकाल) के वाक्यों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण निम्नप्रकार हैं।

तालिका 8

क्रिया	स्त्री वाची एकवचन	पुरुषवाची एकवचन	स्त्रीवाची बहुवचन	पुरुषवाची बहुवचन
रक्षा कर	rak+ i + i = rakiy		rak+ i + ti = rakiti	
	रक्षा करती है।	रक्षा करता है।	रक्षा करती हैं।	रक्षा करते हैं।
देख	bal+ ə + i = balai		bal+ ə + ti = balәti	
	देखती है।	देखता है।	देखती हैं।	देखते हैं।

उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

8.1. वर्तमानकालिक अन्य पुरुष की क्रियाएँ लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् सिंहली में स्त्रीवाची कर्ता के प्रयुक्त होने पर भी क्रिया में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि हिंदी की क्रिया बदलती है।

8.2. सिंहली में वर्तमानकालिक अन्य पुरुष एकवचन के लिए क्रिया में 'i' तथा बहुवचन के लिए 'ti' लगते हैं, जबकि हिंदी में स्त्रीवाची एकवचन स्त्रीवाची बहुवचन पुरुषवाची एकवचन तथा पुरुषवाची बहुवचन के लिए अलग–अलग प्रत्यय– क्रमशः 'ती है', 'ती हैं', 'ता है' तथा 'ते हैं' लगते हैं।

9. सिंहली ओर हिंदी के उद्धाम, मध्यम तााि अनय पुरुष (भविष्यत् काल) के वाकयों का लिंग–वचन की दृष्टि से विश्लेषण निमनप्रकार हें उदाहरण–

तलिका 9

	स्त्रीवाची एकवचन	पुरुषवाची एकवचन	स्त्रीवाची बहुवचन	पुरुषवाची बहुवचन
उत्तम पुरुष	Mamə yannemi (ya+anu+emi)		Api yannemu (ya+anu+emu)	
	मैं जाऊँगी	मैं जाऊँगा	हम जाएंगी	हम जाएंगे
मध्यम पुरुष	To: yannehi (ya+anu+ehi)		Topi yannehu (ya+anu+ehu)	
	तू जाएगी	तू जाएगा	–	–
	Nuɓə yannehi(ya+anu+ehi)		Nuɓəla: yannehu (ya+anu+ehu)	
	तुम जाओगी	तुम जाओगे	तुम लोग जाओगी	तुम लोग जाओगे
	Obə yannehi (ya+anu+ehi)		Obəla: yannehu (ya+anu+ehu)	
	आप जाएंगी	आप जाएंगे	आप लोग जाएंगी	आप लोग जाएंगे
अन्य पुरुष	Shi:la: yanni:yə (ya+anu+i:yə)	Mano:j yanne:yə (ya+anu+e:yə)	Stri:hu yanna:hə (ya+anu+a:hə)	Ovuhu yanno:yə (ya+anu+o:yə)
	शीला जाएगी	मनोज जाएगा	स्त्रियाँ जाएंगी	वे जाएंगे

उपर्युक्त रूपरेखा के विश्लेषण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं–

9.1. सिंहली की क्रियाएँ भविष्यत् काल के उत्तम तथा मध्यम पुरुष में लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् स्त्रीवाची तथा पुरुषवाची स्थितियों में अपरिवर्तित रहती हैं, जबकि हिंदी की क्रियाएँ बदलती हैं।

9.2. भविष्यत् काल के अन्य पुरुष में सिंहली की क्रियाएँ हिंदी की क्रियाओं की तरह लिंग, पुरुष तथा वचन के अनुसार बदलती हैं।

9.3. सिंहली के मध्यम पुरुष के 'तू' के समकक्ष के 'to:' का बहुवचन रूप भी रहता है, जिसके अनुसार क्रिया बहुवचन रूप लेती है। हिंदी में तू का बहुवचन रूप उपलब्ध नहीं है।

9.4. हिंदी की क्रियाओं में उत्तम पुरुष 'हम' मध्यम पुरुष 'आप' तथा अन्य पुरुष 'वे' के साथ पुल्लिंग में एक ही प्रत्य 'एंगे' लगता है, बल्कि सिंहली में उनमें अलग–अलग प्रत्यय लगते हैं।

निष्कर्ष

सिंहली तथा हिंदी की क्रियाओं का लिंग, वचन तथा पुरुष की दृष्टि से समग्र निष्कर्ष निम्नप्रकार है।

1. सिंहली की क्रियाएँ उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष में लिंग निरपेक्ष रहती हैं, अर्थात् स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग में अपरिवर्तित रहती हैं। हिंदी की क्रियाएँ लिंग के अनुसार बदलती हैं।
2. लिंग–वचन के प्रत्यय लगने से पूर्व सिंहली की मूल क्रियाओं में परिवर्तन होता है। हिंदी की मूल क्रियाएँ अपरिवर्तित रहती हैं।
3. प्रायः सभी भूतकालिक वाक्यों में अन्य पुरुष में हिंदी में स्त्री वाची एकवचन पुरुषवाची एकवचन स्त्रीवाची बहुवचन तथा पुरुषवाची बहुवचन के लिए प्रयुक्त प्रत्यों के समकक्ष सिंहली के अन्य पुरुष में उसके क्रमशः उसके अनुरूप के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, लेकिन उत्तम पुरुष एकवचन में बहुवचन में तथा मध्यम पुरुष एकवचन में तथा बहुवचन में अलग–अलग प्रत्यय लगते हैं।
4. हिंदी के प्रायः सभी भूतकालिक वाक्यों में मध्यम पुरुष में 'तुम' तथा 'आप' के साथ पुरुषवाची एकवचन में तथा स्त्रीतवाची एकवचन में सम्मानबोधक प्रत्य प्रयुक्त होते हैं।
5. प्रायः सभी भूतकालिक वाक्यों की सकर्मक क्रियाओं में हिंदी में कर्ता के साथ 'ने' जुड़ता है, और कर्म के लिंग–वचन के अनुसार क्रिया बदलती है।
6. सिंहली के सभी भूतकालिक वाक्यों की भूतकालिक सकर्मक क्रियाओं में सिंहली में कर्ता के साथ 'ने' जैसा कोई प्रत्य नहीं जुड़ता है, और उत्तम तथा मध्यम पुरुष में कर्ता के वचन तथा पुरुष के अनुसार क्रिया बदलती है। केवल अन्य पुरुष में वचन तथा पुरुष के साथ लिंग के अनुसार भी क्रिया बदलती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुरु,कामताप्रसाद.हिंदी व्याकरण.इलाहाबादःलोकभारती प्रकाशन. (2010ई.)
2. चित्रा.हिंदी वाक्यरचना का संबंधपरक अध्ययन.दिल्लीःकालिंग पब्लिकेषन. (1989ई.)
3. तिवारी, भोलानाथ. बाला, किरण. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान. दिल्लीः आलेख प्रकाशन (1983ई.).
4. नेस्पिताल, हेल्मुथत. हिंदी क्रिया–कोश. इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन (2008).
5. पाण्डेय,अनिल कुमार.हिंदी संरचना के विविध पक्ष.नई दिल्लीःप्रकाशन संस्थान.(2010ई.).
6. रस्तोगी,कृष्ण गोपाल.हिंदी क्रियाओं का अर्थपरक अध्ययन. दिल्लीःअर्चना प्रकाशन.(1973ई.).
7. रेड्डी,विजयराघव.व्यतिरेकी भाषाविज्ञान.आगराःविनोद पुस्तक मंदिर. (1986ई.).
8. सिंह,काशीनाथ.प्रथम संस्करण.हिंदी में संयुक्तत क्रियाएँ. इलाहाबादःरचना प्रकाशन.(1976).
9. सिंह,सूरज भान.हिंदी भाषा का वाक्यात्मक व्याकरण. दिल्लीःसाहित्य सहकार. (2000ई.).
10. श्रीवास्तव,रवीन्द्र नाथ.हिंदी भाषाः संरचना के विविध आयाम.नई दिल्लीःराधाकृष्ण प्रकाशन. (1995ई.).
11. अभयसिंह,ए.ए.तथा राजपक्ष,आर. एम्. डब्लिव.भाषा विज्ञान. विश्वाविद्यालीय प्रकाशन.कॅलणियरूकोलोम्बो. (1992)
12. गइगर,विल्हेल्म.सिंहलये वाग्विद्यात्मक स्वरूपय.बोरलैस्गमुवःविष्णु प्रकाशन. (2001ई.)
13. जयसेकर,आनंद.वाग्विद्यात्मक लिपि.कैलणियःसम्भाव्य प्रकाशन. (1996ई.)
14. नागित,कदुरुगमुवे.तथा प्रेमरत्न,अशोक.वाग् विद्या(स्पदहनपेजपबे). विश्वविद्यालीय प्रकाशन.कॅलणियरूकोलोम्बो.(1991)
15. नागित, कदुरुगमुवे. वाग्विदत, वाग्विद्या अध्ययनांशय, कैलणिय विश्वविद्यालय (1996ई.)
16. बलगल्ले,विमल जी.भाषा अध्ययनय हा सिंहल व्यवहारय. कोलोम्बोःएस गोडगे प्रकाशन.(2001ई.)
17. बलगल्ले,विमल जी.सिंहल भाषा अध्ययन लिपि 1.कोलोम्बोःएस गोडगे प्रकाशन.(2004ई.)
18. वासल,मुदलिन्दु.सिंहल वाग विद्या मूलधर्म सिंहल शब्द विभागय. कोलोम्बोःएस गोडगे प्रकाशन.(1990ई.)
19. सुमनजोति,पल्लन्तर.सिंहल व्याकरणय.कोलोम्बोःएस गोडगे प्रकाशन.(1967ई.)
20. Dhongde, RamehVerman.Tense, Aspect and Mood in English and Marathi. Deccan College, Pune.1984

21. Geiger, Wilhelm.A Grammar of the Sinhala Language.SriLanka: Royal Asiatic Society.Translated and Printed.1937
22. Kachru, Yamuna.Introduction to Hindi Syntax.USA-Urbana: University of Illinois.1966
23. Lakshmi Swarajya and Ohters.Word Order in Indian Languages. Booklinks Corporation: Hyderabad.
24. Noel, Burton Roberts.Analyzing sentences.an introduction to English syntax. London and New York: Longman.1986
25. Radford, Andrew.Syntactic theory and the structure of English- A minimalist approach. Cambridge: Cambridge University Press.1997